[This question paper contains 8 printed pages.]

16/5/25

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 801 J

Unique Paper Code : 12051601

Name of the Paper : हिंदी आलोचना

Name of the Course : BA (H) Hindi – CBCS

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित गदयांशों के संदर्भ को स्पष्ट करते हुए व्याख्या लिखिए : (10 + 10 + 10)

(क) लोक में फैली दुख की छाया को हटाने में ब्रह्म की आनंदकला जो शक्तिमय रूप धारण करती है, उसकी भीषणता में भी अद्भुत मनोहरता, कठुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी

आद्रता साथ लगी रहती है। विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्म क्षेत्र का सौंदर्य है, जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता। इस सामंजस्य का और कई रूपों में भी दर्शन होता है। किसी कोट-पतलून-हैट वाले को धारा प्रवाह संस्कृत बोलते अथवा किसी पंडित वेषधारी सज्जन को अंग्रेजी की प्रगल्भ वक्तृता देते सुन व्यक्तित्व का जो एक चमत्कार सा दिखाई पड़ता है, उसकी तह में भी सामंजस्य का यही सौंदर्य समझना चाहिए। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोक धर्म का सौंदर्य है। आदि कवि वाल्मीकि की वाणी इसी सौंदर्य के उद्घाटन-महोत्सव का संगीत है। सौंदर्य का यह उद्घाटन असौंदर्य का आवरण हटाकर होता है। धर्म और मंगल की वह ज्योति अधर्म और अमंगल की घटा को फाड़ती हुई फूटती है। इसमें कवि हमारे सामने असौंदर्य, अमंगल, अत्याचार, क्लेश इत्यादि भी रखता है; रोष, हाहाकार और ध्वंस का दृश्य भी लाता है। पर सारे भाव, सारे रूप और सारे व्यापार भीतर-भीतर आनंदकाल के विकास में योग देते ही पाए जाते हैं।

अथवा

अब साहित्य ने यह काम अपने जिम्मे में ले लिया है और उसका साधन सौंदर्य-प्रेम है। यह मनुष्य में इसी सौंदर्य-प्रेम को जगाने का यत्न करता है। ऐसा कोई मनुष्य नहीं जिसमें सौंदर्य की अनुभूति ना हो। साहित्यकार में यह वृति जितनी ही जागृत और सक्रिय होती है उसकी रचना उतनी ही प्रभावकारी होती है। प्रकृति निरीक्षण और अपनी अनुभूति की तीक्ष्णता की बदौलत उसके सोंदर्य बोध में इतनी तीव्रता आ जाती है कि जो कुछ असुंदर है, अभद्र है, मनुष्यता से रहित है, यह उसके लिए असहय हो जाता है। उस पर वह शब्दों और भावों की सारी शक्ति से वार करता है। अथवा यह कहिए कि वह मानवता दिव्यता और भद्गता का साफा बांधे होता है। जो दलित है, पीड़ित है, वंचित है - चाहे वह व्यक्ति हो या समूह, इसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है। उसकी अदालत समाज है। इस अदालत के सामने वह अपना इस्तगासा पेश करता है और उसकी न्यायवृति तथा सौंदर्यवृति को जागृत करके अपना यत्न सफल समझता है।

(ख) इस मानवतावाद के दो प्रधान लक्षण है – (1) मनुष्य की महिमा और मानवीय मूल्यों में विश्वास और (2) मनुष्य की मर्त्य जीवन को किसी प्रकार के पाप फल भोगने के परिणाम न समझ इसे इसी दुनिया में दुख-शोक से बचाना और इसी दुनिया में सुख समृद्धि से युकत करना। यह दूसरी बात उन सब पुरानी वैरागी मनोभावनाओं का प्रत्याखवान करती है जो शरीर को नाना क्रिछाचारों से तापित करके किसी अनंत शाश्वत सुख की ओर मनुष्य को प्रवृत करती है और इस जीवन का संपूर्ण रूप से उपभोग करने की प्रवृत्ति को प्रश्रय देती है। परंतु पहली भावना इस पर अंकुश का काम करती है; क्योंकि वह मनुष्य के द्वारा उद्भावित पशु समान धरातल से उपरले स्तर के मानसिक संयम, बौद्धिक ईमानदारी और मनुष्य रूप को विकसित करने वाले समस्त नैतिक आदर्शों को बहुत अधिक मूल्य देती है। इस प्रकार यह तो माना जाता है कि मनुष्य को यह मर्त्य जीवन ही चरम और परम है, परंतु साथ ही यह भी माना जाता है कि मनुष्य की मनुष्यता असीम संभावनाओं से भरी है। वह सब प्रकार के नैतिक और आध्यात्मिक विकास का साधन है, उसकी महिमा अपार है।

अथवा

तुलसी की मानवीय सहानुभूति का आधार सामाजिक यथार्थ है। तत्कालीन समाज का जैसा भरा पूरा चित्र उनकी रचनाओं में मिलता है वैसा उस समय के और किसी कवि की रचनाओं में नहीं मिलता। जनता की दरिद्रता उनके क्लेशों का वर्णन उन्होंने बड़े ही यथार्थवादी ढंग से किया है, "खेती ना किसान को, भिखारी को न भीख, बलि बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी।" बड़ी ही स्पष्टता से उन्होंने समाज में सामंतों के कुशासन का सवाल उठाया है। राजा और प्रजा के संघर्ष में तुलसी प्रजा के साथ हैं रामचरितमानस में वह प्रजा को सताने वाले राजाओं के लिए कहते हैं- "जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी द्य ते नूप अवसि नरक अधिकारी ।।"

(ग) तार सप्तक के कवियों पर यह आक्षेप किया गया कि वे साधारणीकरण सिद्धांत नहीं मानते। यह दोहरा अन्याय है। क्योंकि वे न केवल इस सिद्धांत को मानते हैं बल्कि इसी के प्रयोग की आवश्यकता भी सिद्ध करते हैं। यह मानना होगा की सभ्यता के विकास के साथ-साथ हमारी अनुभूतियों का क्षेत्र भी विकसित होता गया है। यह कहा जा सकता है कि हमारे मूल राग-विराग

नहीं बदले, प्रेम अब भी प्रेम है, घृणा अभी घृणा, यह साधारणतया स्वीकार किया जा सकता है। पर यह भी ध्यान में रखना होगा कि राग वही रहने पर भी रागात्मक संबंधों की प्रणालियां बदल गई है; और कवि का क्षेत्र रागात्मक संबंधों का क्षेत्र होने के कारण इस परिवर्तन का कवि कर्म पर गहरा असर पड़ा है। निरे तथ्य और सत्य में या कह लीजिए वस्तु-सत्य और व्यक्ति-सत्य में यह भेद है कि सत्य वह तथ्य है जिसके साथ हमारा रागात्मक संबंध है; बिना इस संबंध के वह एक बाहय वास्तविकता है जो तद्धित काव्य में स्थान नहीं पा सकती। लेकिन जैसे-जैसे बाह्य वास्तविकता बदलती है वैसे-वैसे हमारे उससे रगात्मक संबंध जोड़ने की प्रणालियों भी बदलती हैं और अगर नहीं बदलती तो उसे बाहय वास्तविकता से हमारा संबंध टूट जाता है।

अथवा

अभिव्यक्ति प्राप्त होने पर भाव पक्ष का समाजीकरण हो जाता है। सृजन प्रक्रिया के अंतर्गत विशिष्ट को सामान्य बनाने की यह क्रिया तभी से शुरू हो जाती है जब कवि कला के प्रथम चरण में अंतर-नेत्रों से उस तत्व को देखने लगता है कि जो तत्व उन अंतर नेत्रों के सामने तरंगायित और उद्घाटित हो उठता

है। आगे चलकर समरूप अनुभवों से मिलते हुए वह मनोमय तत्व जब जीवन मूल्य और जीवन दृष्टि से अपना संगम करता है तब वह और भी सामान्य हो उठता है। प्रश्न यह है कि वे जीवन मूल्य और जीवन-दृष्टियां किसकी हैं? वह सामान्य भूमि किसकी है? यह प्रश्न स्वाभाविक है। यह प्रश्न हमें समाजशास्त्रीय आलोचना की ओर ले जाता है। आगे चलकर जबकि कवि अपने मनोमय तत्व रूप को बाहय अभिव्यक्ति के सांचे में ढालने लगता है या जब एक बाह्य अभिव्यक्ति को अंतर अभिव्यक्ति के साइज की, काट की, रंग की बनाने लगता है, तब उसकी आंखों के सामने जो सौंदर्य प्रतिमान होता है वह सौंदर्य प्रतिमान किस सौंदर्यभिरुचि ने, किस वर्ग की सौंदर्यभिरुचि ने उत्पन्न किया है, यह प्रश्न स्वाभाविक हो उठता है।

2. भारतेंदु युगीन हिन्दी आलोचना के महत्व पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

द्विवेदी युगीन हिन्दी आलोचना की प्रमुख विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

3. 'छायावाद और यथार्थवाद' निबंध के आधार पर जयशंकर प्रसाद की आलोचना दृष्टि की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'नई कविता का आत्म संघर्ष' में निहित मुक्तिबोध के विचारों को स्पष्ट कीजिए।

4. 'संदर्भ की खोज' पाठ का प्रतिपादय लिखिए। (15)

अथवा

आलोचना के क्षेत्र में नेमीचंद्र जैन के विशिष्ट योगदान को रेखांकित कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.] 30

Your Roll No. May 2025 e

Sr. No. of Question Paper : 802 **J**

Unique Paper Code : 12051602

Name of the Paper : **हिंदी निबंध और अन्य गद्य विधाएँ**

Name of the Course : **B. A. (H) - Hindi - CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

College Library, Kalkaji, New Delhi

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य है।

1. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए

(क) गुरु नानक ने ठीक कहा है - "भोले भाव मिलें रघुराई"। भोले-भाले किसानों को ईश्वर अपने खुले दीदार का दर्शन देता है। उनकी फूस की छतों में से सूर्य और चंद्रमा छन-छनकर उनके बिस्तरों पर पड़ते हैं। ये प्रकृति के जवान साधु हैं। जब कभी मैं इन बे-मुकुट के गोपालों के दर्शन करता हूँ, मेरा सिर

स्वयं ही झुक जाता है। जब मुझे किसी फकीर के दर्शन होते हैं तब मुझे मालूम होता है कि नंगे सिर, नंगे पाँव, एक टोपी सिर पर, एक लँगोटी कमर में, एक काली कमली कंधे पर, एक लंबी लाठी हाथ में लिए हुए गौवों का मित्र, बैलों का हमजोली, पक्षियों का हमराज, महाराजाओं का अन्नदाता, बादशाहों को ताज पहनाने और सिंहासन पर बिठाने वाला, भूखों और नंगों को पालने वाला, समाज के पुष्पोद्यान का माली और खेतों का वाली जा रहा है।

अथवा

पुरुष के अंधानुसरण ने स्त्री के व्यक्तित्व को अपना दर्पण बनाकर उसकी उपयोगिता तो सीमित कर ही दी थी, साथ ही समाज को भी अपूर्ण कर दिया। पुरुष समाज का न्याय है, स्त्री दया; प्रतिशोधमय क्रोध है, स्त्री क्षमा; पुरुष शुष्क कर्तव्य है, स्त्री सरस सहानुभूति और पुरुष बल है, स्त्री हृदय की प्रेरणा । जिस प्रकार युक्ति से काटे हुए काष्ठ के छोटे बड़े विभिन्न आकार वाले खंडों को जोड़कर हम अखंड चतुष्कोण या वृत्त बना सकते हैं, परंतु उनकी विभिन्नता नष्ट करके तथा सबको समान आकृति देकर हम उन्हे किसी पूर्ण वस्तु का आकार नहीं दे सकते, उसी प्रकार स्त्री- पुरुष के प्राणतिक मानसिक वैपरीत्य द्वारा ही हमारा समाज सामंजस्यपूर्ण और अखंड हो सकता है।

(ख) आदमी की घुमक्कड़ी ने बहुत बार खून की नदियाँ बहाई है, इसमें संदेह नहीं, और घुमक्कड़ों से हम हरगिज नहीं चाहेंगे कि

वे खून के रास्ते को पकड़ें, किन्तु घुमक्कड़ों के काफ़िले न आते-जाते तो सुस्त मानव जातियाँ सो जातीं और पशु से ऊपर न उठ पातीं। आदिम घुमक्कड़ों मे से आर्यो, शकों, हूणों ने क्या क्या किया, अपने खूनी पंथों द्वारा मानवता के पथ को किस तरह प्रशस्त किया, इसे इतिहास में हम उतना स्पष्ट वर्णित नहीं पाते, किन्तु मंगोल घुमक्कड़ों की करामातों को तो हम अच्छी तरह जानते हैं। बारूद, तोप, कागज, छापाखाना, दिग्दर्शक चश्मा यही चीज़ें थीं, जिन्होंने पश्चिम में विज्ञान युग का आरंभ कराया और इन चीजों को वहाँ ले जाने वाले मँगोल घुमक्कड़ थे।

अथवा

राजकीय शक्ति पा जाने के बाद छोटी समझी जाने वाली जाति भी उत्तम क्षत्रिय मान ली गई और आर्थिक उन्नति के साथ शूद्र का दरजा बढ़कर वैश्य का दरजा बन गया है। इसके उदाहरण बहुत हैं। वस्तुतः इन कारणों से जातियों की सामाजिक मर्यादा जितनी बढ़ी है, उतनी धार्मिक आंदोलनों के कारण एकदम नहीं। ऐसा लगता है कि भारतवर्ष की शताधिक जातियों को कल्याण मार्ग की ओर अग्रसर करने का एकमात्र तरीका यह है कि राजनीतिक और आर्थिक मर्यादा ऊँची की जाए। जिस दिन इस अकारण दलित जनसमूह में राजनीतिक गरिमा और आर्थिक स्वाधीनता का संचार होगा, उसी दिन वह वास्तव में मुक्त हो सकेगा। (8+7=15)

2. बालकृष्ण भट्ट की निबंध शैली की विशेषता बताते हुए 'जातियों का अनूठापन' पाठ की मूल संवेदना लिखिए। (15)

अथवा

'मजदूरी और प्रेम' निबंध का सार लिखिए।

3. हरिशंकर परसाई की निबंध शैली के आधार पर उनके द्वारा लिखित 'वैष्णव की फिसलन' निबंध के कथ्य और शिल्प पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

महादेवी वर्मा कृत 'हमारी शृंखला की कड़ियाँ' निबंध का सारांश बताते हुए उसके परिपाद्य पर प्रकाश डालिए।

4. 'अपनी खबर' के आधार पर पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र के व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'नए संघर्ष' की विधागत विशेषता बताते हुए पाठ के आधार पर निराला के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

5. संस्मरण विधा के रूप में आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री कृत 'अज्ञेय के साथ' पाठ की समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

रेखाचित्र के तत्वों के आधार पर 'सुभान खाँ' पाठ की समीक्षा करते हुए सुभान खाँ के चरित्र की विशेषताएं बताइए ।

(100)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 23/5/25 R

Sr. No. of Question Paper : 805 **J**

Unique Paper Code : 12057609

Name of the Paper : Bhartiya Sahitya: Pathparak Adhyayan (DSE)

भारतीय साहित्य : पाठपरक अध्ययन

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) हमारे घर के भीतर

बहुत सारी युवतियों के बीच जो कोई हो ऐसी

विधाता की सर्वप्रथम कृति - सी

समझ लेना, बस वही है दूसरी मेरी जान

सहचर के अभाव में कम बोलने वाली चकई

बहुतों के बीच भी अकेली

बड़ी ही बेचैनी से काट रही होगी वियोग के ये दिन

अथवा

पिया को खोजने मैं निकली

सुध न रही कब यह दिन बीता

कब यह रात ढली !

मिले अंत में घर में ही तो

मेरे कंत छली

(ख) यदि हम चारों ओर देखें तो पाएंगे

मनुष्य जन्म से समान है, एक ही भातृ

संप्रदाय के हैं, और भगवान की दृष्टि

में समान हैं ।

भोजन, जाति या जन्म-स्थल से मनुष्य

की योग्यता नहीं बदल जाती

अथवा

हो श्रमिक - कृषक जनता का सादर वंदन - अभिनंदन

हो परजीवी का घोर निरादर, तोदन, अपनोदन

अब निष्फल निरुद्देश्य श्रम कर हम श्रांत नहीं होंगे

बनकर अयोग्य जन के परिचर हम क्लांत नहीं होंगे

(ग) उस दिन तड़के ही शंकरन नायर उठकर कहीं चले गए थे। लेकिन पार्वती थोड़े ही कहीं जा सकती थी। निशि - दिन उसकी आँखे बरसती रहीं। जिस पुत्र को अपनी कोख में दस महीने ढोकर जन्म दिया उस पुत्र ने न केवल उसकी अवहेलना की बल्कि अपनी माता को कहीं मुँह दिखाने योग्य न रखा। वह यह भली भाँति जानती थी कि यह सारा ठाठ- बाट उसे और उसके पति को अपमानित करने के लिए ही है। इस काम में उसका बेटा उन लोगों का साथ देता है। वह सब कुछ भूला हुआ है।

अथवा

गाँधीजी ने महादेव को गुलाब के फूल की उपमा दी थी और कवयित्रि सरोजिनी नायडू ने उन्हें जुने गुजरात की उपाधि दी थी। दोनों उपमाओं के पीछे थी उनकी पुष्प-सी कोमल संवेदनाएँ। भावनाप्रधान महादेव अपने पौराणिक नामराशि महादेव की तरह

आशुतोष से थे ही, साथ-साथ जरा-सा धक्का लगने पर निराश हो जाने का स्वभाव भी रखते थे। इसी कारण जीवन में प्राप्त हुई छोटी-छोटी निराशाओं ने उन्हें जीवन से तंग बना दिया होगा। तारुण्य के कारण इस निराशा की भावना का प्राबल्य बढ़ गया होगा । अनुभवी राजनैतिक नेताओं जैसे मोटी और सख्त चमड़ीवाले महादेवभाई नहीं थे ।

2. 'उत्तर मेघ' के आधार पर कालिदास के काव्यसौन्दर्य का विवेचन कीजिए। (15)

अथवा

नामदेव के काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

3. वल्लतोल की कविता श्क्षमा प्रार्थनाश की मूलसंवेदना पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

रवीन्द्रनाथ टैगोर की काव्य-चेतना का विवेचन कीजिए।

4. 'मृत्युंजय' उपन्यास के नायक के चरित्र की विशेषताओं का विवेचन कीजिए । (15)

अथवा

'अग्निकुंड में खिला गुलाब' के कथ्य पर प्रकाश डालिए ।

(100)

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 27/5/25

Sr. No. of Question Paper : 807 **J**

Unique Paper Code : 12057611

Name of the Paper : अवधारणात्मक साहित्यिक पद

Name of the Course : **B.A (H) Hindi - DSE**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 75

Instructions for Candidates

1. Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अलंकार के स्वरूप पर विचार करते हुए रूपक अलंकार को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

शब्द शक्ति के अभिप्राय को स्पष्ट करते हुए लक्षणा शब्द शक्ति के भेदों पर विचार कीजिए ।

2. काव्य लक्षण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए (12)

अथवा

महाकाव्य का स्वरूप स्पष्ट करते हुए खण्डकाव्य एवं महाकाव्य के प्रमुख भेदों को लिखिए ।

3. समाजवादी यथार्थवाद की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए यथार्थवाद से उसकी भिन्नता रेखांकित कीजिए । (12)

अथवा

स्वच्छंदतावाद की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर चर्चा करते हुए उसकी विशेषताओं को लिखिए ।

4. बिंब की परिभाषा बताते हुए उसके महत्व को उदाहरण सहित स्पष्ट करें। (12)

अथवा

कहानी के स्वरूप और उसके प्रमुख तत्वों का विश्लेषण कीजिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए (9×3=27)

(क) छंद

(ख) उत्तर आधुनिकता

(ग) काव्य हेतु

(घ) अभिधा शब्द शक्ति

(ङ) खंडकाव्य

(च) उपन्यास

[This question paper contains 2 printed pages.] 16 15 May

Your Roll No. 2025

J

Sr. No. of Question Paper : 6043

Unique Paper Code : 2052103601

Name of the Paper : Hindi Bhasha : Swaroop, Sanrachna Evam Itihas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

Deshbandhu College Library Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी प्रश्न** अनिवार्य हैं।

1. भारोपीय भाषा परिवार से आप क्या समझते हैं? हिन्दी किस प्रकार भारोपीय भाषा परिवार से संबंधित है? विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

हिंदी भाषा की विकास यात्रा को रेखांकित कीजिए।

P.T.O.

2. भौगोलिक क्षेत्र विस्तार की दृष्टि से हिंदी भाषा एवं इसकी विविध बोलियों का परिचय दीजिए। (15)

अथवा

राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा के स्वरूप पर लेख लिखिए।

3. राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा से आप क्या समझते हैं? राजभाषा के रूप में हिंदी के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

हिंदी भाषा का किस प्रकार ज्ञान-विज्ञान के माध्यम के रूप में प्रयोग हो रहा है? सविस्तार समझाइए।

4. सिनेमा की भाषा में किस प्रकार शीघ्रता से रूप परिवर्तन दिखाई पड़ रहे हैं? तर्कसंगत विवेचना कीजिए। (15)

अथवा

सोशल मीडिया की भाषा का स्वरूप बताते हुए उसकी विशेषताएं लिखिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) मध्यकालीन आर्यभाषा

(ii) राजस्थानी हिंदी की बोलियां

(iii) संपर्क भाषा

(iv) प्रिंट मीडिया की भाषा

(v) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की भाषा

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No. 23/5/25

Sr. No. of Question Paper : 6102 **J**

Unique Paper Code : 2052103602

Name of the Paper : **अस्मितामूलक हिंदी साहित्य (दलित विमर्श, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श)**

Name of the Course : **DSC : Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. स्त्री विमर्श को परिभाषित करते हुए उदारवादी और मार्क्सवादी अवधारणाओं पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

आदिवासी विमर्श के विभिन्न पक्षों को स्पष्ट कीजिए।

P.T.O.

2. 'यही सच है' कहानी स्त्री के प्रेम और द्वन्द्व की कथा है - स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'पच्चीस चौंका डेढ़ सौ' कहानी समता तथा मुक्ति के लिए संघर्षरत दलित चेतना की कहानी है - समीक्षा कीजिए।

3. 'सोनवा का पिंजरा' कविता का मूल भाव स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'कहाँ हो तुम माया' कविता में निहित आदिवासी स्त्री की समस्याओं और संघर्षों को उजागर कीजिए।

4. स्त्री की पराधीन स्थिति के लिए महादेवी वर्मा किन कारको को जिम्मेदार मानती है - विस्तारपूर्वक उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'जंगल से आगे' आत्म संस्मरण में निहित आदिवासी स्त्री के अस्तित्व और संघर्ष की गाथा को स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित आंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (8×3)

(क) बालमन की यह खरोंच ग्रन्थि बन गयी थी। जब भी पच्चीस की संख्या पढ़ता या लिखता, उसे पच्चीस चौंका डेढ़ सौ ही याद आता। साथ ही याद आता पिताजी का विश्वास भरा चेहरा और मास्टर शिवनारायाण मिश्रा का गाली-गलौच करता लाल-लाल

गुस्सैल चेहरा। दोनों चेहरे एक साथ स्मृति में दबाए पच्चीस चौका डेढ़ सौ की अंधेरी दुर्गम गलियों में भटकने लगा। जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, कई सवाल उसके मन को विचलित करने लगे। जिनके उत्तर उसके पास नहीं थे।

अथवा

ननकु ने सुना तो कहा- "झालो दीदी, जेरकु भाई ठीक कह रहे हैं। दुख भरे गीत बड़े मधुर होते हैं सुनने में। परंतु जेरकु भाई को यह भी जानना चाहिए कि दुख के मधुर गीत गाते रहने से पेट नहीं भरेगा और सचमुच भूखा पेट से कोई दर्द भरा गीत भी कब तक गया सकेगा? जेरकु भाई, भूख मिटनी चाहिए पहले तब गीत, नाच और नगाड़े सुहावने लगेंगे। भूखे पेट नहीं।"

(ख) देशवां आजाद अहै हम तो गुलमवाँ,
हमरे लिए न सरकार।
एस कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई'
हमरउ करावा उरधार।।

अथवा

पानदान वह छोटा-सा डिब्बा
रख दूँगी उसमें प्यारे-प्यारे तारे
आसमान -
बुरा मत मानना
देखा है मैंने हमेशा उनमें तुम्हीं को।

(ग) मुझे प्राय: गालियों के सम्बोधन से पुकारा जाता। स्कूल से शाम को घर आते ही पशुओं को चारा-पानी देने का काम मुझे सौंप दिया जाता। रात में सबसे बड़ा संकट यह था की चिराग न होने से मैं कुछ भी पढ़ नहीं पाता था। पहले एक ढिबरी जलाकर पढ़ा करता था, किन्तु दसवीं कक्षा में उसे जलाने के लिए मिट्टी का तेल मिलना बंद हो गया। घर में एक लालटेन जरूर थी, किन्तु घर वाले इसका इस्तेमाल बहुउद्देशीय कार्यों के लिए किया करते थे। अत: रात में न पढ़ पाना मुझे सबसे ज्यादा खलता था।

अथवा

पुरुष ने उसके अधिकार अपने सुख की तुला पर तोले, उसकी विशेषता पर नहीं; अत: समाज की सब व्यवस्थाओं में उसके और पुरुष के अधिकारों में एक विचित्र विषमता मिलती है। जहां तक सामाजिक प्राणी का प्रश्न है, स्त्री पुरुष के समान ही सामाजिक सुविधाओं की अधिकारिणी है, परंतु केवल अधिकार की दुहाई, देकर ही तो वह सबल-निर्बल का चिरंतन संघर्ष और उससे उत्पन्न विषमता नहीं मिटा सकती।

6. किसी एक विषय पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) एलिस एक्का की कहानी में प्रकृति और समाज

(ख) मुर्दहिया और दलित चेतना

This question paper contains 3 printed pages]

Roll No.

S. No. of Question Paper : **6157**

Unique Paper Code : **2052103603**

Name of the Paper : **Kathetar Gadya Sahitya**

Type of the Paper : **DSC**

Semester : **VI**

DESHBANDHU COLLEGE LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **90**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए। 15

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य एवं कथा साहित्य के अंतःसंबंध को स्पष्ट कीजिए।

2. कथेतर साहित्य की प्रमुख विधाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिए। 15

अथवा

रेखाचित्र और संस्मरण के अंतर को स्पष्ट करते हुए रेखाचित्र विधा की विशेषताएँ लिखिए।

3. 'आवारा मसीहा' जीवनी के आधार पर शरतचन्द्र की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'दद्दा' संस्मरण के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए।

P.T.O.

4. निराला के पत्र साहित्य की विषय-वस्तु और प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 15

अथवा

'डायरी' विधा के आधार पर रमेशचंद्र शाह की रचना 'अकेला मेला' की समीक्षा कीजिए।

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×8=16

(क) राजसिक गर्व-भरी मुद्रा से माइक को मेज़ पर ठेल कर नीचे गिराते और सबको सकते में डालते हुए उन्होंने बोलना आरंभ किया तो उनके पहले ही शब्दों से सारी सभा में एक सनसनी-सी दौड़ गई। एक सन्नाटा और उसके बाद डेढ़ लाख जनता तक प्रयासरहित सहजता से पहुँचने वाले पहले ही शब्द - 'मेरी आवाज़' - 'मेरी आवाज़' भारत की लाख-लाख जनता तक किसी यंत्र के सहारे के बिना ही पहुँचेगी। माइक को उठा फेंकने की सफाई अंग्रेजी में देकर उन्होंने सभा को एक बार फिर अचरज में डालते हुए हिन्दुस्तानी में बोलना आरंभ किया।

अथवा

माखनलाल जी की कविता से पहला परिचय कारावास में हुआ। और भी अनेक पाठकों का पहला परिचय उसी कविता से हुआ होगा जिससे मेरा, पर उस परिस्थिति में नहीं। दिल्ली षड्यंत्र केस के एक अभियुक्त के रूप में दिल्ली जेल में लंबे दिन काटते हुए मैंने एक कापी में हिंदी की कविताएँ उतार कर रखना आरंभ किया था : कविता पढ़ने में रुचि थी और किताबें एक साथ दो-तीन से अधिक रख नहीं सकता था इसलिए पसंद की कविताएँ कापी में नकल करके पुस्तकें लौटा कर नई पुस्तकें मंगाता रहता था...तभी एक दिन चमत्कृत-सा होकर एक भारतीय आत्मा की छोटी-सी कविता पढ़ी।

(ख) मंदिर का विशाल प्रांगण खचाखच भरा था। उस विशाल जल-समुद्र में उठती हिलोरों ने मुझे छू लिया : पाँवों का जंगल था वह-पाँवों का समुद्र-कोमल फूल सरीखे पाँव...जर्जर

बिवाइयों से भरे पाँव, नंगे काले खुरदरे पाँव, गोरे, गहनों से अलंकृत पाँव....। कमजोर और लड़खड़ाते पाँव, फुरतीले थिरकते पाँव.....। पाँवों का मेला था वह, मुझ पर से गुजरता हुआ। और मैं ? मैं कहाँ था ? उस जंगल, उस समुद्र में ?.....।

अथवा

इस नाच की उत्पत्ति दरभंगा जिले में हुई, ऐसा अनुमान किया जाता है। पता नहीं, अपनी जन्मभूमि में इसकी क्या अवस्था है, किंतु उत्तरी बिहार के कुछ जिलों तथा भागलपुर, पूर्णिया आदि के गांवों में आज भी इसकी 'कद्र' है। यह निम्न स्तर के लोगों की ही चीज रह गई है। तथाकथित भद्र समाज के लोग इस नाच को देखने में अपनी हेठी समझते हैं, लेकिन मुसहर, धांगड़, दुसाध के यहाँ – विवाह, मुंडन तथा अन्य अवसरों पर इसकी धूम मची रहती है। जब से मैं अपने को भद्र और शिक्षित समझने लगा, तब से इस नाच से दूर रहने की चेष्टा करने लगा, किंतु थोड़े दिनों के बाद ही मुझे अपनी गलती मालूम हुई और मैं इसके पीछे 'फिदा' रहने लगा।

6. किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : 2×7=14

(1) जीवनी विधा : उद्भव और विकास

(2) पत्र-साहित्य की विशेषताएँ

(3) 'अकेला मेला' डायरी की **दो** प्रमुख घटनाएँ

(4) 'अज्ञेय' की दृष्टि में 'उपन्यास सम्राट'।

02/6/25

[This question paper contains 3 printed pages]

Your Roll No. : ....

Sl. No. of Q. Paper : **6267** **I**

Unique Paper Code : 2053100014

Name of the Paper : Shodh Pravidhi

Type of the Course : **DSE**

Semester : VI

Programme : Hindi

LIBRARY
Karol, New Delhi

Time : 3 Hours ***Maximum Marks : 90***

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश :

(a) इस प्रश्न-पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें।

(b) **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. शोध की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

शोध के विभिन्न क्षेत्रों का वर्णन कीजिए।

P.T.O.

2. तुलनात्मक शोध पद्धति अथवा समाजशास्त्रीय शोध पद्धति का विश्लेषण कीजिए। 15

3. शोध - प्रक्रिया के विविध चरणों में विषय - चयन एवं तथ्य - विश्लेषण का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 15

अथवा

'शोध प्रबंध लेखन शोध - प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण चरण है' - तर्क सहित उत्तर दीजिए।

4. शोध करते हुए एक शोधार्थी को किन - किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है ? स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

एक अच्छे शोधार्थी में कौन - कौन से गुण अपेक्षित हैं ? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : $10 \times 3 = 30$

(i) शोध प्रक्रिया

(ii) पाठालोचन

(iii) सामग्री संकलन

(iv) रूपरेखा निर्माण

(v) संदर्भ सूची निर्माण

***